CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

अंतर्विषयक अन्वेषण के अंतर्गत हिंदी विषय में सुधार

श्रीमती शालिनी भारद्वाज
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गुरुनानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा
Email-shalinibhardwajynr@gmail.com, Mob.- 9416794708

First draft received: 15.10.2025, Reviewed: 20.10.2025
Final proof received: 22.10.2025, Accepted: 29.10.2025

सारांश

इक्कीसवीं सदी में अंतर्विषयक अन्वेषण की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज के जटिल होने के कारण शैक्षणिक विषयों की सीमाएँ विस्मृत हो रही हैं। हिंदी जैसे परंपरागत विषय की वर्तमान शिक्षा-पद्धति, पाठ्यक्रम और संस्थागत संरचना को अंतर्विषयक दृष्टिकोण से संशोधित किये बिना व्यावहारिक, तकनीकी और वैश्विक कौशल प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस शोध-पत्र में हिंदी शिक्षा में पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति और संस्थागत स्तर पर अंतर-विषयक सुधार लाकर उसे अधिक प्रासंगिक, व्यावसायिक और नवाचारोन्मुख बनाना दर्शाया गया है। शोध-पत्र में व्यवहारिक उदाहरणों, डिजिटल साहित्य और नवीन शैक्षिक पद्धतियों के माध्यम से भविष्य की हिंदी शिक्षा का नक्शा प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: *अंतर्विषयक अन्वेषण, हिंदी शिक्षा, पाठ्यक्रम सुधार, व्यावसायिक हिंदी, डिजिटल साक्षरता, शैक्षिक नवाचार, शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन, साहित्यिक अनुसंधान, भाषा कौशल।*

प्रस्तावना

अंतर्विषयक (Interdisciplinary) का अर्थ है दो या उससे अधिक शैक्षणिक या विद्यार्जन विषयों के मिश्रित अध्ययन क्षेत्र को कहा जाता है। इसका उद्देश्य विभिन्न विषयों के ज्ञान, सिद्धांत, और विधियों को मिलाकर एक व्यापक और संयुक्त दृष्टिकोण विकसित करना होता है। उदाहरण के लिए, भूमंडलीय ऊष्मीकरण (Global Warming) का अध्ययन भौतिकी, भूगोल, जीव विज्ञान और अन्य कई विषयों का समन्वय करके किया जाता है, जिसे अंतर्विषयक अध्ययन कहा जाता है। यह विभिन्न विषयों के बीच सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।वर्तमान युग में शिक्षण और अनुसंधान में अंतर्विषयकता की आवश्यकता नई नहीं है, किंतु इसकी प्रासंगिकता अब अत्यंत बढ़ गई है। समाज में परिवर्तन, विज्ञान और तकनीकी विकास, वैश्वीकरण और नई चुनौतियों के बीच पारंपरिक विषयों की स्वायत्तता सीमित होती जा रही है। हिंदी को आज सिर्फ साहित्य या भाषा का विषय मानकर पढ़ाना, छात्रों के भविष्य के साथ न्याय नहीं करता। डिजिटाइज़ेशन और मल्टी-डिसिप्लिनरी कार्यक्षेत्रों में हिंदी की नई भूमिकाएँ उभर रही हैं।

अंतर्विषयकता का अर्थ व महत्व

अंतर्विषयकता का आशय विभिन्न विषयों के विचार, पद्धति और उपकरणों को संयोजित करके संपूर्ण एवं व्यवस्थित ज्ञान का निर्माण करना है। इसमें विज्ञान, समाजशास्त्र, प्रौद्योगिकी, दर्शन, मनोविज्ञान, राजनीति जैसे क्षेत्रों के विशेषज्ञ मिलकर ज़्यादा जटिल और वास्तविक समस्याओं का समाधान खोजते हैं।

- कृषिशास्त्र में जैव-विज्ञान, मौसम विज्ञान, अर्थशास्त्र और सामाजिक अध्ययन का समावेश।
- स्वास्थ्य क्षेत्र में सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्रशासन, समाजशास्त्र, आँकड़ा विज्ञान का अनुशासन।
- भाषाई नवाचार जैसे मशीन अनुवाद- हिंदी, कम्प्यूटर साइंस और गणित के संयुक्त अनुसंधान का परिणाम है।
- यह दृष्टिकोण केवल ज्ञान के फैलाव तक सीमित नहीं, बल्कि नवीन व्यावहारिकताओं, नवाचार और टिकाऊ विकास का स्रोत भी है।

अंतर्विषयकता की विशिष्टताएँ

- समावेशी ज्ञान: भिन्न क्षेत्रों के एकीकरण से सुसंगठित और व्यापक दृष्टि विकसित होती है।
- समस्या-आधारित समाधान: यह पद्धति केवल अवधारणाओं से ऊपर उठकर, व्यवहारिक समस्याओं के हल पर केंद्रित है।
- अनुकूलनशीलता: ज्ञान, तकनीक, और समाज की बदलती मांग के अनुसार उदारता और लचीलापन।
- रचनात्मकता: सीमाओं को पार करते हुए नवीन पद्धति के नए अवसर उत्पन्न होते हैं।
- प्रभावी मूल्यांकन: परिणामों का व्यापक परीक्षण, विविध पैमानों (लिखित, परियोजना, प्रस्तुति आदि) द्वारा संभव।

साहित्य एवं भाषा-अनुसंधान:

- डिजिटल मानविकी: डेटा विश्लेषण, मशीन लर्निंग और क्लाउड कंप्यूटिंग के सहयोग से साहित्य संवर्धन।
- नारीवाद, दलित साहित्य, आदिवासी विमर्श: इस क्षेत्र में सिर्फ साहित्यिक नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता होती है।
- हिंदी विषय में अंतर्विषयक सुधार की आवश्यकता
- हिंदी विषय का पारंपरिक पाठ्यक्रम मुख्यतः कविताएँ, कहानियाँ व व्याख्या तक सीमित है, जबकि आज की दुनिया डिजिटल, व्यावसायिक, तकनीकी और प्रशासनिक हिंदी की माँग करती है। जो इस प्रकार हैं:-

<u>पाठ्यक्रम में बदलाव</u>

- प्रयोगात्मक हिंदी (Functional Hindi): सरकारी, व्यावसायिक, मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र हेतु हिंदी लेखन, रिपोर्ट, ईमेल, सोशल मीडिया पोस्ट, ऑफिस मीडिया।
- कार्यालयी पत्राचार, विज्ञापन, तकनीकी रिपोर्ट लेखन का प्रशिक्षण।
- अनुबन्ध लेखन, सरकारी दस्तावेज़ों व अधिसूचनाओं का अनुवाद व विश्लेषण।
- डिजिटल सामग्री: TED Talks, पॉडकास्ट, वेबिनार आदि हिंदी में अध्ययन व उपयोग नवाचार के नए आयाम तय होंगे।
- आधुनिक सामग्री का समावेश: वैज्ञानिक, तकनीकी, समसामयिक निबंध; टेक्नोलॉजी विषयक हिंदी लेख; सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग।
- डिजिटल पुस्तकों, डॉक्युमेंट्री वीडियो, ऑनलाइन ब्लॉगरों की हिंदी सामग्री एक नई क्रांति को जन्म देगी।

<u>शिक्षण पद्धति में सुधार</u>

- गतिविधि आधारित शिक्षण: परस्पर संवाद, वाद-विवाद, प्रस्तुति, नाट्य मंचन, कहानी लेखन, विज्ञापन प्रतियोगिता में हिंदी का प्रयोग अहम कदम है।
- उदाहरण: "मौसम परिवर्तन पर हिंदी वाद-विवाद", सोशल मीडिया सामग्री निर्माण।
- अनुभवी सीख फील्ड वर्क, केस स्टडी इसे एक जीवंत रूप देगी।
- तकनीक का समावेश: स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग टूल्स, हिंदी टाइपिंग, मोबाइल ऐप्स (जैसे Learn Hindi, Google Input Tools) का प्रयोग एक नए सशक्त माध्यम को प्रस्तुत करेगा।
- उदाहरण स्वरूप: भाषा पाठशालाएँ-ऑनलाइन फोरम, खुले स्रोत मनोरंजक प्रश्नोत्तरी, खेल, डिजिटल परियोजना व e-Presentation आदि।

<u>संस्थागत एवं मूल्यांकन सुधार</u>

- अंतर्विषयक परियोजनाएँ और पाठ्यक्रम: "तकनीकी में निपुण लोगों के लिए हिंदी", "विज्ञान-पत्रकारिता में हिंदी", "प्रशासनिक हिंदी" और "सॉफ्टवेयर में स्थानीय भाषाएँ" जैसे कोर्स।
- इंजीनियरिंग, समाजशास्त्र, विज्ञान, पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक हिंदी पाठ्यक्रम बहुत उपयोगी साबित होंगे।
- मूल्यांकन प्रणाली: प्रोजेक्ट वर्क, प्रस्तुति, संविभाग, संवाद और अनुवाद की परीक्षा।
- मौखिक परीक्षा, ग्रुप डिस्कशन, रिपोर्ट प्रस्तुति, ऑनलाइन प्रस्तुति।
- मूल्यांकन में 60% व्यवहारिक, 40% सैद्धांतिक संतुलन।

व्यवहारिक उदाहरण और सामयिक सन्दर्भ वर्तमान में बैंकिंग सेक्टर, प्रशासनिक, विज्ञान, मीडिया व डिजिटलीकरण में हिंदी की माँग है।

- उदाहरण: "डिजिटल बैंकिंग पोर्टल" पर हिंदी इंटरफेस, "सरकारी वेबसाइट" में हिंदी कंटेंट मैनेजमेंट, "जस्टिस सिस्टम" के लिए हिंदी अनुवाद, सोशल मीडिया कैम्पेन।
- "स्वदेशी अपनाओ देश बढ़ाओ" जैसे हिंदी स्लोगन, हिंदी TED Talk आधारित मूल विचार को प्रस्तुत किया जाता है।

निष्कर्ष

अंतर्विषयकता के बिना हिंदी का अध्ययन अधूरा और सीमित है। नवाचार, डिजिटल अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रतियोगिता के इस युग में हिंदी में अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाकर ज्ञान, पेशा, और नवाचार के नए आयाम खोले जा सकते हैं। पाठ्यक्रम, शिक्षण, संस्थागत ढांचे और मूल्यांकन में इन सुधारों से हिंदी केवल एक विषय न रहकर जीवन, उद्योग और राष्ट्र निर्माण की भाषा बन सकती है।

अंतर्विषयकता (Interdisciplinarity) और बहुविषयकता

(Multidisciplinarity) शिक्षा और अनुसंधान के दो महत्वपूर्ण दृष्टिकोण हैं। अंतर्विषयकता में विभिन्न विषयों के ज्ञान, सिद्धांतों और विधियों को जोड़कर एक नया और एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया जाता है, जबकि बहुविषयकता में अलग-अलग विषय एक साथ होते हैं, लेकिन वे अपनी सीमाओं के भीतर रहते हैं और ज्ञान को मिश्रित नहीं करते। हिंदी विषय अंतर्विषयकता में विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक संदर्भों के माध्यम से ज्ञान को जोड़ने का काम करता है। हिंदी भाषा और साहित्य सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक इतिहास को समृद्ध करते हुए अन्य विषयों के अध्ययन में संवाद और समन्वय का पुल बनाते हैं। इससे अध्ययन और शोध की व्यापकता और गहराई बढ़ती है।

अतः अंतर्विषयकता एक समग्र, सहयोगात्मक और दक्ष अध्ययन पद्धति है जो विभिन्न विषयों के बीच गहरा संबंध स्थापित करती है, और हिंदी विषय इस समेकित दृष्टिकोण में

एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे भारतीय सांस्कृतिक और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य और भी मजबूत होता है।

संदर्भ

1. **शिक्षा आयोग रिपोर्ट** (पृष्ठ 319)
2. **हिंदी साहित्यिक अनुसंधान में प्रयुक्त परंपरागत एवं आधुनिक शोध**
3. **अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान इंटरनेशनल शोध पत्रिका**
4. **विकिपीडिया**